रात के बारह बजे

रात नौ बजे के करीब हम दोनों ने साथ में डिनर किया और फिर उसके बाद राजू चला गया पढ़ने के? लिए और मैं जूठे बर्तन समेटने लगी फिर रसोई की हल्की फुल्की सफाई और बाद में बचे हुए खाना को फ्रीज में रख कर मैं भी चली गयी अपने कमरे में कुछ देर पेपर वगैरा देखने के बाद मेरी आंख लग गई और मैं सो गई । लगभग दो तीन घंटे बाद रौशनी की वजह से मेरी नींद खुल गई । मैंने देखा राजू सो रहा है और उसके कमरे की लाइट जल रही है । साथ ही किताबे कापी पेन सारी चीजें बिखरी पड़ी हैं और वही पास ही उसका मोबाइल और लापटाप भी पड़ा हुआ था । बाहर अगल बगल के सभी लोग जाग रहे थे ।तो मुझे इस बात का अंदाजा बिल्कुल भी नहीं हुआ कि इतना समय हो रहा होगा । मैंने लेटे लेटे ही राजू को दो तीन बार आवाज दी मगर उस ने कोई उत्तर नहीं दिया । मैं सोची बच्चा है दिन भर स्कूल ट्यूशन के चक्कर लगालगा कर थक गया होगा । शायद सो गया है चलो मैं ही उसकी किताबें समेट कर रख देती हूं । मैं जैसी थी वैसी ही उठ कर राजू के कमरे में गई और सबसे पहले उसका लापटाप उठा कर रखने लगी । जैसे ही मैंने लापटाप को अपनी तरफ घुमाया मैं देख कर क्षुब्ध रह गई । लापटाप का कैमरा आन था और दूसरी तरफ एक लड़की सफेद जैकेट और कैप पहने कैमरे के सामने बैठी थी । मुझे देखते ही उस ने झट से अपना कैमरा बंद कर लिया ।नाम तो नहीं मालूम मगर चेहरे से मैंने उसे पहचान लिया ।लापटाप बंद करते ही मैनें सबसे पहले समय देखा रात के बारह बज रहे थे । घड़ी देखते ही मेरे तो होश उड़ गये ।इतनी रात गये वे लड़की यहां कैमरे के सामने अकेले कर क्या रही है । सभी बच्चे तो चले गये मगर ये अभी तक यही क्यों है । बहुत सारी बातें मेरे मस्तिष्क में चलने लगी । दर असल स्कूल के कुछ बच्चों का यह ग्रुप है । जहां ये लोग साथ में पढ़ते हैं । पढ़ाई मगर इतनी रात गये । कुछ समझ में नहीं आया मेरे पर इस वक्त मैं कर भी क्या सकती थी । चुप रहने के सिवाय। सबकुछ समेट कर जब हाल आई तो वहां की लाइट भी आन थी मैंने उसे भी बंद कर दिया फिर डोर बंद है की नहीं चेक करके रसोई चली गयी थोड़ा पानी पिया और वापस अपने बिस्तर पे आकर लेट गई । रात इसी उधेड़ बुन में बीती कि आखिर ये चल क्या रहा था ..?? आज से पहले तो कभी राजू ने ऐसा कुछ नहीं किया है ..?? फिर आज ऐसा कैसे कर सकता है वो ..?? इतनी लापरवाही उस वक्त गुस्सा तो मुझे बहुत आ रहा था मगर मैं चुप रही और वो लड़की कैसी थी उसे इतना भी अक्ल नहीं है कि जब सभी बच्चे चले गये तो उसे भी जाना चाहिए । इस तरह किसी को सोते हुए निहारना कोई अच्छी बात तो नहीं । मालूम नहीं ये बच्चे समझते क्यों नहीं हर चीज की एक सीमा होती है ।इन्हें तो इन सब से कुछ मतलब ही नहीं है बस मनमानी करनी है । क्या कर कैसे समझाऊं ये सब सही नहीं है ।किसी के भी सामने इतना फ्री मत हो जाना है कि कल वो आपका फायदा उठाने लगे । मालूम नहीं वो लड़की देर रात सबके वहां चले जाने के बाद भी वहां क्यों ठहरी हुई थी । मुझे तो ये बड़ा अजीब लगता है । सुबह जब राजू से इस बारे में मैंने बात की तो वो भी शौक में था ।कहने लगा हम सभी लोग साथ में पढ़ाई कर रहे थे ।मालूम नही कब मुझे नींद आ गया और मैं सो गया । मुझे नहीं मालूम कौन सी लड़की सबके चले जाने के बाद भी उस वक्त तक वहां बैठी थी और क्या कर रही थी । ग्रुप में तो बहुत सी लड़कियां हैं । उसके रिएक्शन पे मैंने उसे प्यार से समझाया देखो वो जमाना चला गया जब लोग लड़कियों को बुरा भला कहा करते थे और उस पे चिल्ला चिल्ली भी किया करते थे । अब तो सारा आरोप लड़कों पे आ जाता है । दोस्ती यारी सब अपनी जगह है पर इस तरह रात के समय ये सब मुझे कुछ ठीक नहीं लग रहा है । आगे से तुम ध्यान रखना ऐसी ग़लती फिर दुबारा मत करना । जमाना बहुत खराब है किसी का कोई भरोसा नहीं कौन कब क्या करें कहना बहुत मुश्किल कठिन है।मैं जानती हूं तुम बड़े हो गये हो अपना ख्याल रख सकते हो और मैं ये भी जानती हूं कि तुम समझदार हो? इसलिए तुम्हें समझा रही हूं डांट नहीं रही हूं । तुम्हारे दुख सुख से मुझे बहुत फर्क पड़ता है इसलिए कह रही हूं आगे से ध्यान रखना ..!!

किरण काजल बेंगलुरु

आत्म चिंतन : महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि

पांचों ज्ञानेंद्रियां और हम

बचपन से अभी तक हमने अपनी पांचों ज्ञानेन्द्रियों... आंख, कान, नाक, जीभ और त्वचा से भिन्न-भिन्न भोगों को ग्रहण किया है। यह भोग हमने बार-बार किए हैं और हर बार उसी प्रकार की उत्सुकता से किए हैं और भोग के उस क्षण में एक प्रकार की सुखानुभूति हुई है, किंतु अगले ही क्षण में वह सुख गायब हो जाता है। हम फिर से उसी सुख की तलाश में निकल पड़ते हैं। यही प्रक्रिया हम हजारों बार दोहरा चुके हैं फिर भी बार-बार-बार उसी में उलझे हैं। शास्त्रों ने इसे 'चर्वित - चवण' कहा है...चबाये हुए को चबाते रहना, लार युक्त बनाते रहना.. कब हम इस बंधन से मुक्त होंगे। आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो ऐसी कामनाएं।जय जगद्गुरु भगवान महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि।

(गुरू) सूबेदार रावत गर्ग उण्डू (राज)श्री हरि विष्णु कृपा, श्री गर्गवास राजबेरा, राजस्थान

युवा कौशल से ही देश की तरक्की है

मंडला-शासकीय जगन्नाथ मुन्नालाल चौधरी महिला महाविद्यालय में बुधवार को युवा कौशल दिवस के अवसर पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन प्राचार्य प्रो.शरद नारायण खरे के संरक्षण तथा मार्गदर्शन व स्वामी विवेकानंद कैरियर मार्गदर्शन प्रकोष्ठ के प्भारी टीपीओ डॉ विनीत टॉडिया के संयोजन-संचालन में किया गया। संयोजक ने दिवस की महत्ता व विषय पर विस्तृत प्रकाश डालते हुए कौशल का अर्थ बताया और कौशल (स्किल)को आजीविका/अर्थोपार्जन से जोड़कर उपस्थित छात्राओं को स्किलफुल बनने का संदेश दिया।डा एपसी धूमकेती, जिला नोडल अधिकारी ने कहा कि परंपरागत हार्ड कौशल के साथ ही वर्तमान के सोफ्ट कौशल में पारंगतता से ही कैरियर बनना संभव है। सुश्री सुंदरवती यहके, सुश्री पूजा टेमरे की उपस्थिति विशेष रही। प स्चार्य प्रो.शरद नारायण खरे ने सविस्तार बताया कि विश्व की युवाआबादी का बीस प्रतिशत हिस्सा भारत में रहता है, और भारत की कुल1.47 अरब आबादी में 55% आबादी युवा है। इसलिए तय है कि युवाओं के तकनीकी ज्ञान,कला-कौशल परिपक्वता, कम्पयुटर- दक्षता, ओटोमोबाइल स्किल, इलेक्ट्रोनिक नोलेज परफेक्शन,आईटी सेंस, मैनेजमेंट एफीसिएंसी,टेलरिंग, फैशन डिजाइनिंग, इन्नोवेशन्स तथा अन्यान्य कौशल से ही यूथ प्रोफेशनल कैरियर मेकिंग संभव है। आभार प्रदर्शन के साथ ही सार्थक व उपयोगी परिचर्चा समाप्त हुई।

सुशासन की सबसे बड़ी परीक्षा

भ्रष्टाचार पर चर्चा प्रायः किसी घोटाले, आरोप या राजनीतिक विवाद के समय तेज हो जाती है, किंतु सुशासन का वास्तविक मूल्यांकन उन क्षणों में नहीं होता जब समाचार सुर्खियाँ बनते हैं, बल्कि तब होता है जब सामान्य नागरिक बिना किसी भय, सिफारिश या अतिरिक्त बोझ के अपने अधिकार प्राप्त कर सके। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था की विश्वसनीयता इस बात से तय होती है कि उसकी संस्थाएँ नियमों से संचालित होती हैं या व्यक्तियों की इच्छा से। यही कारण है कि भ्रष्टाचार को केवल आर्थिक अपराध मानना पर्याप्त नहीं है। यह शासन व्यवस्था की गुणवत्ता, संस्थागत संस्कृति, सार्वजनिक नैतिकता और नागरिक विश्वास का भी प्रश्न है।

आधुनिक समय में भ्रष्टाचार का स्वरूप पहले की तुलना में अधिक जटिल हो चुका है। पहले इसे मुख्यतः रिश्वत, कमीशन या सरकारी धन के दुरुपयोग तक सीमित माना जाता था, जबकि आज इसके अनेक रूप दिखाई देते हैं। नीतिगत पक्षपात, नियामकीय प्रभाव, हितों का टकराव, अपारदर्शी राजनीतिक वित्तपोषण, सार्वजनिक खरीद में अनियमितता, डिजिटल मंचों पर डेटा का दुरुपयोग और प्रभावशाली समूहों द्वारा नीति निर्माण को प्रभावित करने के प्रयास भी इसी व्यापक परिघटना का हिस्सा हैं। इसलिए भ्रष्टाचार की चर्चा केवल आपराधिक कार्रवाई तक सीमित रखने के बजाय प्रशासनिक सुधार, संस्थागत जवाबदेही और पारदर्शी निर्णय प्रक्रिया से जोड़ना आवश्यक है।

ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल के 2025 के करप्शन परसेप्शन इंडेक्स ने एक बार फिर संकेत दिया कि विश्व के अधिकांश देशों में सार्वजनिक क्षेत्र की पारदर्शिता अपेक्षित स्तर तक नहीं पहुँच सकी है। रिपोर्ट में वैश्विक औसत स्कोर में गिरावट तथा अनेक लोकतांत्रिक देशों में भी संस्थागत चुनौतियों की ओर ध्यान आकर्षित किया गया है। यह निष्कर्ष स्पष्ट करता है कि केवल आर्थिक विकास भ्रष्टाचार को स्वतः समाप्त नहीं करता। यदि स्वतंत्र निगरानी संस्थाएँ, निष्पक्ष जांच व्यवस्था, प्रभावी न्यायिक प्रक्रिया और जवाबदेह प्रशासन समान गति से विकसित न हों, तो आर्थिक प्रगति भी सीमित प्रभाव छोड़ती है।

डिजिटल शासन को भ्रष्टाचार कम करने का प्रभावी माध्यम माना गया है। प्रत्यक्ष लाभ अंतरण, ऑनलाइन भुगतान, ई-टेंडरिंग, डिजिटल रिकॉर्ड, भू-अभिलेखों का डिजिटलीकरण और सेवा वितरण की ऑनलाइन व्यवस्था ने अनेक स्तरों पर मानवीय हस्तक्षेप कम किया है। इससे पारदर्शिता बढ़ी है और कई प्रक्रियाएँ पहले की तुलना में सरल हुई हैं। किंतु यह मान लेना उचित नहीं होगा कि तकनीक स्वयं भ्रष्टाचार समाप्त कर देती है। यदि डिजिटल प्रणाली का ऑडिट, साइबर सुरक्षा, डेटा संरक्षण और स्वतंत्र निगरानी कमजोर रहे तो अनियमितताओं का स्वरूप केवल बदल जाता है, समाप्त नहीं होता।

भ्रष्टाचार का सबसे गंभीर प्रभाव आर्थिक असमानता पर पड़ता है। जब संसाधनों का वितरण योग्यता के बजाय प्रभाव के आधार पर होने लगे, तब प्रतिस्पर्धा कमजोर पड़ती है। ईमानदार उद्यमियों का विश्वास घटता है, निवेश की गुणवत्ता प्रभावित होती है और नवाचार की गति धीमी हो जाती है। इसका प्रत्यक्ष असर रोजगार, उत्पादकता और कर संग्रह पर दिखाई देता है। अंततः इसकी कीमत वही नागरिक चुकाता है जिसका शासन व्यवस्था में सबसे कम प्रभाव होता है।

राजनीतिक वित्तपोषण का प्रश्न भी इस विमर्श का महत्वपूर्ण भाग है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनाव अत्यंत आवश्यक हैं, किंतु चुनावी प्रक्रिया जितनी महंगी होती जाएगी, उतनी ही पारदर्शिता की आवश्यकता भी बढ़ेगी। चुनावी चंदे, व्यय, प्रचार और वित्तीय स्रोतों के संबंध में स्पष्ट नियम, स्वतंत्र लेखा परीक्षण और समयबद्ध सार्वजनिक प्रकटीकरण लोकतांत्रिक विश्वास को मजबूत करते हैं। राजनीतिक प्रतिस्पर्धा स्वस्थ तभी मानी जाएगी जब वित्तीय पारदर्शिता सभी पक्षों पर समान रूप से लागू हो।

समान रूप से महत्वपूर्ण विषय नियामकीय संस्थाओं की स्वतंत्रता है। जब किसी संस्था पर अत्यधिक राजनीतिक, आर्थिक या प्रशासनिक प्रभाव पड़ने लगे, तब उसका निर्णय सार्वजनिक हित के बजाय विशेष हितों की ओर झुक सकता है। इसलिए नियामक संस्थाओं की नियुक्ति प्रक्रिया, कार्यकाल, वित्तीय स्वायत्तता और जवाबदेही का संतुलित ढाँचा लोकतांत्रिक शासन की आधारशिला माना जाना चाहिए। केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं, बल्कि उनका निष्पक्ष क्रियान्वयन अधिक महत्वपूर्ण है।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष में न्यायपालिका की दक्षता भी निर्णायक भूमिका निभाती है। यदि जांच वर्षों तक लंबित रहे, मुकदमे अनिश्चितकाल तक चलते रहें या दोषसिद्धि की प्रक्रिया अत्यधिक धीमी हो, तो कानून का निवारक प्रभाव कमजोर पड़ जाता है। समयबद्ध जांच, आधुनिक फोरेंसिक क्षमता, डिजिटल साक्ष्य प्रबंधन और न्यायालयों में तकनीकी संसाधनों का विस्तार इस दिशा में आवश्यक सुधार हैं। न्याय केवल होना ही नहीं चाहिए, बल्कि समय पर होता हुआ दिखाई भी देना चाहिए।

लोकतंत्र में स्वतंत्र मीडिया और सक्रिय नागरिक समाज की भूमिका भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। खोजी पत्रकारिता, सूचना के अधिकार का प्रभावी उपयोग, सामाजिक लेखा परीक्षा और जनभागीदारी प्रशासनिक जवाबदेही को मजबूत करते हैं। साथ ही मीडिया की विश्वसनीयता भी तथ्यपरकता, स्रोतों की पुष्टि और संतुलित प्रस्तुति पर निर्भर करती है। सूचना की गति जितनी बढ़ी है, उतनी ही जिम्मेदारी सत्यापन की भी बढ़ी है।

शिक्षा व्यवस्था में नैतिक प्रशासन और सार्वजनिक उत्तरदायित्व को अधिक महत्व दिए जाने की आवश्यकता है। भ्रष्टाचार केवल कानून का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक व्यवहार का भी प्रश्न है। यदि नई पीढ़ी यह मानने लगे कि नियमों का उल्लंघन सफलता का सामान्य साधन है, तो कोई भी कानूनी व्यवस्था पर्याप्त सिद्ध नहीं होगी। विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और प्रशिक्षण संस्थानों में ईमानदारी, सार्वजनिक संसाधनों के सम्मान और संवैधानिक मूल्यों पर आधारित नागरिक शिक्षा को व्यवहारिक रूप में विकसित करना समय की आवश्यकता है।

व्हिसलब्लोअर संरक्षण भी सुधार का एक महत्वपूर्ण आयाम है। अनेक मामलों में अनियमितताओं की जानकारी सबसे पहले संस्थानों के भीतर कार्यरत लोगों को होती है, किंतु पर्याप्त सुरक्षा के अभाव में वे सामने आने से हिचकते हैं। प्रभावी कानूनी संरक्षण, गोपनीय शिकायत व्यवस्था और प्रतिशोध से सुरक्षा किसी भी पारदर्शी शासन प्रणाली के लिए अनिवार्य है। इससे संस्थागत सुधार भीतर से प्रारंभ होते हैं और अनियमितताओं का समय रहते पता लगाया जा सकता है।

सार्वजनिक खरीद प्रणाली में खुली प्रतिस्पर्धा, डिजिटल निगरानी, स्वतंत्र ऑडिट और अनुबंधों का सार्वजनिक प्रकटीकरण भी भ्रष्टाचार नियंत्रण के प्रभावी साधन हैं। विश्व बैंक, ओईसीडी तथा संयुक्त राष्ट्र से जुड़े अनेक अध्ययन यह संकेत देते हैं कि प्रतिस्पर्धी और पारदर्शी खरीद व्यवस्था सार्वजनिक व्यय की गुणवत्ता बढ़ाती है तथा संसाधनों के दुरुपयोग की संभावना घटाती है। इसलिए सरकारी व्यय की प्रत्येक महत्वपूर्ण प्रक्रिया नागरिकों के लिए अधिकाधिक पारदर्शी बनाई जानी चाहिए।

यह भी समझना होगा कि भ्रष्टाचार का समाधान केवल कठोर दंड से संभव नहीं है। दंड आवश्यक है, किंतु उससे पहले ऐसी प्रशासनिक संरचना विकसित करनी होगी जिसमें विवेकाधीन शक्तियाँ सीमित हों, प्रक्रियाएँ सरल हों, सेवा वितरण समयबद्ध हो और निर्णयों का डिजिटल रिकॉर्ड सुरक्षित रहे। जितनी कम अनावश्यक जटिलता होगी, उतने ही कम अवसर अनियमितताओं के लिए बचेंगे।

अंततः किसी भी लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति उसकी संस्थाओं पर जनता का विश्वास होता है। यह विश्वास भाषणों या अभियानों से नहीं, बल्कि निष्पक्ष प्रशासन, पारदर्शी नीति निर्माण, समान कानून, प्रभावी निगरानी और समयबद्ध न्याय से निर्मित होता है। भ्रष्टाचार के विरुद्ध वास्तविक सफलता तभी संभव है जब सरकार, न्यायपालिका, मीडिया, निजी क्षेत्र और नागरिक समाज अपनी-अपनी संवैधानिक जिम्मेदारियों का ईमानदारी से निर्वहन करें। सुशासन कोई एक बार प्राप्त होने वाली उपलब्धि नहीं, बल्कि निरंतर आत्मसमीक्षा, संस्थागत सुधार और सार्वजनिक उत्तरदायित्व की सतत प्रक्रिया है। यही प्रक्रिया लोकतंत्र टैक्स केवल चुनावों तक सीमित नहीं रहने देती, बल्कि उसे नागरिक विश्वास, समान अवसर और न्यायपूर्ण विकास की स्थायी आधारशिला में परिवर्तित करती है।

अवनीश कुमार गुप्ता
साहित्यकार एवं स्वतंत्र स्तंभकार

बचपन पर बढ़ता शैक्षिक बोझ

किसी भी राष्ट्र का भविष्य उसके बच्चों की आँखों में पलने वाले सपनों में बसता है। वे सपने तभी आकार लेते हैं जब उनका बचपन स्वतंत्र हो, उनकी जिज्ञासा जीवित हो और सीखने की प्रक्रिया उनके लिए आनंद का विषय बने। शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य केवल अक्षरज्ञान कराना या परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त करवाना नहीं है, बल्कि बच्चों के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करना है। दुर्भाग्यवश आज हमारी प्रारंभिक शिक्षा व्यवस्था इस मूल उद्देश्य से भटकती हुई दिखाई देती है। कि उनका बचपन धीरे-धीरे पुस्तकों के पन्नों के बीच सिमटने लगता है।

वह आयु, जिसमें बच्चों को मिट्टी से खेलना चाहिए, रंगों से कल्पनाएँ गढ़नी चाहिए, पेड़ों की छाया में दौड़ना चाहिए और प्रकृति से संवाद करना चाहिए, उसी आयु में उनके कंधों पर भारी-भरकम बस्ते लाद दिए जाते हैं। लंबा पाठ्यक्रम, प्रतिदिन का गृहकार्य, कठिन प्रोजेक्ट और निरंतर मूल्यांकन उनके जीवन का हिस्सा बन जाते हैं। परिणामस्वरूप शिक्षा एक आनंददायक यात्रा न होकर दबाव और भय का पर्याय बन जाती है। यह स्थिति केवल बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं करती, बल्कि उनके स्वाभाविक विकास को भी बाधित करती है।

विडंबना यह है कि आज छोटे बच्चों के विद्यालयी प्रोजेक्ट भी ऐसे बनाए जाते हैं जिन्हें बच्चे स्वयं पूरा नहीं कर सकते। अंततः माता-पिता ही रात-रात भर जागकर मॉडल तैयार करते हैं, चित्र बनाते हैं और प्रस्तुतियाँ सजाते हैं। ऐसे प्रोजेक्ट बच्चों की प्रतिभा का नहीं, बल्कि अभिभावकों के समय, संसाधनों और कौशल का प्रदर्शन बनकर रह जाते हैं। शिक्षा का उद्देश्य यदि आत्मनिर्भरता और सीखने की क्षमता विकसित करना है, तो ऐसी व्यवस्था उस उद्देश्य के बिल्कुल विपरीत प्रतीत होती है।

आज अनेक विद्यालयों में शिक्षा के स्थान पर प्रदर्शन की संस्कृति विकसित होती दिखाई देती है। आकर्षक भवन, आधुनिक सुविधाएँ और भव्य आयोजनों के बीच शिक्षा का मूल स्वर कहीं खोता जा रहा है। भारी फीस, अतिरिक्त गतिविधियों के नाम पर बढ़ते शुल्क और प्रतिस्पर्धा की अंधी दौड़ ने शिक्षा को एक प्रकार का व्यवसाय बना दिया है। अभिभावक अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए हर संभव प्रयास करते हैं, किंतु कई बार वे अनजाने में उसी दबावपूर्ण व्यवस्था का हिस्सा बन जाते हैं, जो बच्चों के बचपन को सबसे अधिक प्रभावित करती है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि इस व्यवस्था में बच्चों की जिज्ञासा धीरे-धीरे समाप्त होने लगती है। वे प्रश्न पूछने के स्थान पर उत्तर रटने लगते हैं। उनकी कल्पनाशक्ति, रचनात्मकता और स्वतंत्र चिंतन अंक प्राप्त करने की होड़ में कहीं पीछे छूट जाते हैं। जबकि बाल मन स्वभाव से जिज्ञासु होता है। वह हर वस्तु को छूकर, देखकर, अनुभव करके सीखना चाहता है। यदि उसे केवल पुस्तकों और गृहकार्य तक सीमित कर दिया जाए, तो उसकी सीखने की स्वाभाविक प्रक्रिया बाधित हो जाती है।

वहाँ यह माना जाता है कि शिक्षा का प्रथम उद्देश्य बच्चे के भीतर सीखने का उत्साह जगाना है, न कि उसे प्रारंभ से ही प्रतिस्पर्धा की दौड़ में धकेल देना। यही कारण है कि वहाँ के बच्चे आत्मविश्वासी, रचनात्मक और स्वतंत्र विचारों वाले नागरिक बनकर उभरते हैं। भारत जैसे युवा देश में भी समय की माँग हैकिंतु इसकी वास्तविक सफलता तभी संभव होगी जब इसे प्रत्येक विद्यालय में गंभीरता और संवेदनशीलता के साथ लागू किया जाए। बच्चों के बस्तों का भार कम किया जाए, गृहकार्य को सीमित और सार्थक बनाया जाए, प्रोजेक्ट ऐसे हों जिन्हें बच्चे स्वयं पूरा कर सकें तथा शिक्षा को परीक्षा-केंद्रित बनाने के स्थान पर जीवन-केंद्रित बनाया जाए।साथ ही, अभिभावकों की भूमिका भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। प्रत्येक माता-पिता अपने बच्चे को सफल देखना चाहते हैं, किंतु सफलता का अर्थ केवल अधिक अंक प्राप्त करना नहीं होता। यदि बच्चा संवेदनशील, जिज्ञासु, आत्मविश्वासी और नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण बनता है, तो वही शिक्षा की सबसे बड़ी उपलब्धि है। बच्चों की तुलना दूसरों से करने के स्थान पर उनकी व्यक्तिगत रुचियों और क्षमताओं को समझना आवश्यक है। हर बच्चा अपनी गति से सीखता है और उसी गति का सम्मान किया जाना चाहिए। यह भी स्मरण रखना होगा कि बचपन जीवन का वह अध्याय है जो एक बार बीत जाने के बाद कभी लौटकर नहीं आता। यदि यही समय तनाव, भय और अनावश्यक दबाव में व्यतीत हो जाए, तो उसके दूरगामी दुष्परिणाम केवल शिक्षा तक सीमित नहीं रहते, बल्कि पूरे व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं। स्वस्थ समाज वही होता है जहाँ बच्चों की मुस्कान पुस्तकों के बोझ तले दबने के बजाय उनके सपनों के साथ खिलती है।शिक्षा का अर्थ केवल विद्यालय की चारदीवारी में सीमित ज्ञान नहीं, बल्कि जीवन जीने की कला सिखाना है। ऐसी शिक्षा, जो बच्चे के मन में जिज्ञासा जगाए, उसके व्यक्तित्व को संवेदनशील बनाए, उसे प्रश्न पूछने का साहस दे और जीवन की वास्तविक चुनौतियों का सामना करने योग्य बनाए। जब तक हमारी शिक्षा व्यवस्था बचपन को बचाने का संकल्प नहीं लेती, तब तक केवल पाठ्यक्रम बदलने से अपेक्षित परिवर्तन संभव नहीं होगा। आवश्यकता इस बात की है कि हम बच्चों को केवल सफल नहीं, बल्कि प्रसन्न, रचनात्मक और मानवीय नागरिक बनने का अवसर दें। क्योंकि शिक्षा की सबसे बड़ी उपलब्धि अंकों से नहीं, बल्कि मुस्कुराते हुए बचपन और सशक्त व्यक्तित्व से मापी जाती है।

मनीषा मंजरी
कवयित्री और उपन्यासकार

पत्रकारिता और साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर हैं कवि मृत्युंजय साधक

मुजफ्फरपुर। वरिष्ठ टीवी पत्रकार एवं प्रख्यात कवि मृत्युंजय साधक (मृत्युंजय कुमार श्रीवास्तव) अपनी प्रभावशाली पत्रकारिता और साहित्य-साधना के कारण देशभर में विशिष्ट पहचान रखते हैं। उत्तर प्रदेश के देवरिया में 3 मई 1976 को जन्मे साधक जी ने बी.एससी., एम.ए. (हिंदी), एम.फिल. तथा जामिया मिलिया इस्लामिया, नई दिल्ली से पत्रकारिता की शिक्षा प्राप्त की है। उनका ग़ज़ल संग्रह 'है दिल की बात' साहित्य जगत में विशेष रूप से सराहा गया है। उनकी ग़ज़लें, दोहे और कविताएँ अनेक प्रतिष्ठित संकलनों में प्रकाशित हो चुकी हैं। साहित्य और पत्रकारिता में उल्लेखनीय योगदान के लिए उन्हें सरस्वती प्रतिभा सम्मान, युवा कवि सम्मान, हिंदयुग्म सम्मान, अटल बिहारी वाजपेयी काव्य प्रतिभा सम्मान सहित अनेक राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त हो चुके हैं। युवा साहित्यकार कुमार संदीप ने कहा कि साधक जी अपनी सरलता, विनम्रता और युवा रचनाकारों को निरंतर प्रोत्साहित करने के लिए भी विशेष रूप से जाने जाते हैं। उनकी लेखनी सत्य, संवेदना और मानवीय मूल्यों की सशक्त अभिव्यक्ति मानी जाती है। साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका योगदान नई पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बना हुआ है।

संघर्ष, साहित्य और सेवा के प्रेरक व्यक्तित्व हैं डॉ. विजय कुमार पाठक

मुजफ्फरपुर। संघर्ष, साहित्य, अध्यात्म और समाजसेवा के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले प्रख्यात होम्योपैथ चिकित्सक एवं साहित्यकार डॉ. विजय कुमार पाठक आज अनेक लोगों के लिए प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। 20 अक्टूबर 1969 को सकरा प्रखंड के रैनी गांव में जन्मे डॉ. पाठक ने कठिन आर्थिक परिस्थितियों के बावजूद उच्च शिक्षा प्राप्त कर चिकित्सा और साहित्य, दोनों क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया।उनकी रचनाएँ अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं।महाकवि जानकी बल्लभ शास्त्री से उनका आत्मीय संबंध रहा तथा उनकी रचनाएँ अनेक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रही हैं। वे तुलसी साहित्य विकास एवं नव काव्य सृजन परिषद के संस्थापक एवं राष्ट्रीय अध्यक्ष के रूप में हिंदी साहित्य के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। डॉ. विजय कुमार पाठक का जीवन संघर्ष, संस्कार, साहित्य और संवेदना का सुंदर समन्वय है। उनकी सादगी, विनम्रता, साहित्य-प्रेम और समाज के प्रति समर्पण नई पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

1981 बैच के हाई स्कूल उतीर्ण लोगों ने 'जन्म भूमि सिंदरी' मे मनाया अपने 61 वर्ष को यादगार

सिंदरी (धनबाद) राजेंद्र उच्च विद्यालय सिंदरी से हाई स्कूल 1981 बैच के उतीर्ण मित्रों ने ' जन्म भूमि सिंदरी ' मे अपने जीवन के, 61 वर्ष पूरे कर देश भर में विभिन्न पदों और ओहदे पर रह सेवा निवृत्ति के बाद साथ मिलकर सिंदरी के सिया रेस्टोरेंट मे अपने अपने अनुभव साझा कर यादगार शाम बनाया ! इसका आयोजन पी डी आई एल- सिंदरी के पूर्व महाप्रबंधक एवं वर्तमान पी डी आई एल - एडवाईजर मोहम्मद् अबुल कलाम अनवर ने किया और संचालन पूर्व महाप्रबंधक (पॉवर प्लांट) संजय सिंह ' चंदन' ने किया । इस अवसर पर प्रमुख व्यवसायी नन्द कुमार विनायक, वरिष्ठ पत्रकार उमेश तिवारी, भारतीय जीवन बीमा के डेवलॉपमेंट अधिकारी गणेश पांडेय, पूर्व महाप्रबंधक विद्यानंद दुबे, पूर्व वरिष्ठ अभियंता बी सी सी एल प्रियदीप घोष, डी वी सी, मैथन महाप्रबंधक एवं प्रोजेक्ट हेड आनंद मोहन प्रसाद, वरिष्ठ शिक्षक अजीत

सिंह, प्रबंधक रवींद्र उपाध्याय, व्यवसायी शंकर लाल गुप्ता, व्यवसायी सरदार प्रेम सिंह , व्यवसायी हिरण्य प्रसाद, राम प्रकाश शर्मा, मुल्क राज दुबे, भाजपा नेता व के सी एन क्लब के मंडलीय अध्यक्ष रवि कुमार, समाज सेवी श्यामल अड्डो, भाजपा नेता रास बिहारी पाठक, चंद्रशेखर झा, अनुपम सुर आदि मौके पर उपस्थित थे !

सभी पुराने मित्रों ने स्वादिष्ट व्यंजनों का आहार ग्रहण किया और डी जे के धुन पर अवकाश उप्र के पड़ाव को भी सार्थक बनाकर थिरके !! अंत मे संचालन करता संजय सिंह ' चंदन ' ने आयोजनकर्ता मोहम्मद अबुल कलाम अनवर को आयोजन की भव्य सफलता के लिए आभार व्यक्त किया और सभी मित्रों के प्रति आभार व्यक्त कर, सभी ने यादगार फोटोग्राफी, सेल्फी को कैमरे में कैद कर वापस अपने गंतव्य को प्रस्थान किया !!